Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

नारी सशक्तिकरण एवं पारिवारिक संबंध

*भरत एम पटेल

मौलिक रूप से हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज रहा है. महिलाओं को हमेशा यहां दोयम दर्जे का स्थान ही प्रदान किया गया है. पहले महिलाओं के पास किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता ना होने के कारण उनकी सामाजिक और पारिवारिक स्थिति एक पराश्रित से अधिक और कुछ नहीं थी, जिसे हर कदम पर एक पुरुष के सहारे की जरूरत पड़ती थी. वैसे तो आजादी के बाद से ही महिला उत्थान के उद्देश्य से विभिन्न प्रयास किए जाते रहे हैं. लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिला सशक्तिकरण की बयार में अत्याधिक तेजी देखी गई है. इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप महिलाओं के आत्मविश्वास में कई गुणा बढ़ोतरी हुई है और वे किसी भी चुनौती को स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार करने लगी हैं. जहां सरकारें महिला उत्थान के उद्देश्य से नई–नई योजनाएं बनाने लगी हैं, वहीं कई गैर–सरकारी संगठन भी उनके अधिकारों के लिए अपनी आवाज बुलंद करने लगे हैं. नारी सशक्तिकरण के तहत महिलाओं के भीतर ऐसी प्रबल भावना को उजागर करने का प्रयास भी किया जा रहा है कि वह अपने भीतर छिपी ताकत को सही मायने में उजागर कर, बिना किसी सहारे के आने वाली हर चुनौती का सामना कर सकें.

आज की महिलाएं सिर्फ घर गृहस्थी को संभालने तक ही सीमित नहीं रही हैं, बल्कि हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है. व्यावसायिक क्षेत्र हो या पारिवारिक, महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि वे हर वो काम कर सकती हैं जो कभी पुरुषों के योग्य समझा जाता था. कुछ समय पहले तक जिन व्यवासायिक क्षेत्रों में केवल पुरुषों का ही वर्चस्व हुआ करता था, अब वहां महिलाओं को काम करते देखकर हमें आश्चर्य नहीं होता है. शिक्षा और आत्म–निर्भर बन जाने के कारण वह अपने ऊपर विश्वास कर, अपने जीवन संबंधी निर्णय लेने लगी हैं.

लेकिन नारी सशक्तिकरण की पैरवी करते हुए हम इस बात को नकार नहीं सकते कि जब हम किसी एक को सशक्त करने की बात करते हैं तो स्वाभाविक तौर पर हम दूसरे व्यक्ति के अधिकार क्षेत्र को सीमित कर रहे होते हैं. दूसरे शब्दों में कहा जाए तो महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए जरूरी है कि पुरुष वर्चस्व की महत्ता को कम कर दिया जाए. ऐसे हालातों में भारतीय पुरुष जो महिलाओं का दमन–शोषण करना अपना शौक समझते थे, वह इस बात को वहन नहीं कर पा रहे कि

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

दबी–कुचली महिलाएं अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने लगें. यहीं कारण है कि महिला सशक्तिकरण को बहुत अधिक तरजीह दिए जाने के बावजूद पुरुष वर्ग में एक तबका ऐसा भी है जो महिलाओं की आजादी को अपने लिए घातक मानकर चल रहा है. अपने झूठे पुरुषत्व को कायम रखने और महिलाओं को उनसे निम्न होने का अहसास दिलवाने के लिए वह कभी उसके सम्मान के साथ खिलवाड़ करता है तो कभी उस पर हाथ उठाता है.

हम बड़े गर्व के साथ सरकारों द्वारा बनाई जा रही योजनाओं को अपना लेते हैं. लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि महिलाओं के लिए बनाई गई विभिन्न योजनाएं उन्हें अधीनस्थ और शोषित होने का ही अहसास दिलवाती हैं. घरेलू हिंसा को रोकने और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने जैसे कानून हमारे समाज की इसी कड़वी हकीकत को बयान करते हैं कि समय परिवर्तित हो जाने के बाद भी पुरुष आज भी स्वयं को महिलाओं को सम्मान देना पसंद नहीं करते. उनकी मानसिकता आज भी पहले जैसी ही है. विवाह के तुरंत बाद ही उसे अपनी पत्नी के साथ मारपीट करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है. बेटी को शादी के बाद दूसरे घर ही जाना है तो उसे पढ़ा–लिखा कर खर्चा क्यों किया जाए. लेकिन जब सरकार उन्हें लालच देती है, तो वह उसे पढ़ाने के लिए भी तैयार हो जाते हैं और हम यह समझने लगते है कि परिवारों की मानसिकता बदल रही हैं.

दुर्भाग्यवश नारी सशक्तिकरण केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सिमटकर रह गया है. एक ओर बड़े–बड़े शहरों और महानगरों में रहने वाली महिलाएं शिक्षित, आर्थिक रुप से स्वतंत्र, विभिन्न क्षेत्रों में ऊंचे पदों पर काम करने वाली और आधुनिक विचारधारा महिलाएं हैं, जो पुरुषों के दमन को किसी भी रूप में सहन नहीं करना चाहतीं. अपने साथ हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध वह अपने दम पर लड़ना जानती हैं. इनकी संख्या भले ही कम हो, लेकिन उन्होंने जो सम्मानजनक स्थिति प्राप्त की है, वह बेहद प्रशंसनीय है. वहीं दूसरी तरफ ग्रामीण इलाकों में तो आज भी नारी के अस्तित्व पर प्रश्नचिंह ही लगा हुआ है. गांवों में रहने वाली महिलाएं ना तो अपने अधिकारों को जानती हैं और ना ही उनके महत्व को समझती हैं. जिस कारण वह पति के अत्याचारों और सामाजिक लांक्षनों को अपनी नियति समझकर सहन करने को विवश हो जाती हैं.

हमारा पुरुष प्रधान समाज जिन संस्कारों, परंपराओं और मर्यादाओं की दुहाई देकर महिलाओं को अपने द्वारा निर्मित दायरे में बांध कर रखना चाहता हैं, पुरुष द्वारा उन्हीं सीमाओं का अतिक्रमण और अवमानना कोई नई बात नहीं है. खास बात तो यह है कि उसे ऐसे कृत्य के लिए कोई ठोस सजा नहीं

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

दी जाती. वहीं अगर कोई महिला इन बंधनों को तोड़ कर बाहर निकलना चाहे तो उसे हमारे समाज के ठेकेदारों की कोप दृष्टि का पात्र बनना पड़ता है. हम भले ही खुद को आधुनिक कहने लगे हों, लेकिन वास्तविकता यही है कि आधुनिकता केवल हमारे पहनावे और व्यवहार में आई है लेकिन चरित्र और विचारों से अभी भी हमारा समाज और इसमें रहने वाले लोग पिछड़े हुए ही हैं. पुरुष वर्ग महिलाओं को आज भी एक वस्तु की भांति अपने अधीन बनाए रखना चाहता है. आज महिलाएं गृहणी से लेकर एक सफल व्यावसायी की भूमिका को सहज ढ़ंग से निभा रही हैं. वह स्वयं को पुरुषों से बेहतर साबित करने का एक भी मौका गंवाना नहीं चाहती. अगर वह खुद में छिपी ताकत को पहचान अपना पृथक और स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करने का प्रयास करती है तो वह पुरुषों से ज्यादा बेहतर निर्णय लेने की भी काबिलियत रखती हैं. आधुनिक युग की महिलाएं पुरुष के समकक्ष ही नहीं, बल्कि कई क्षेत्रों में तो पुरुष के वर्चस्व को भी चुनौती दे रही हैं. अपनी मेहनत और काबिलियत के बल पर उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है.

पारिवारिक स्थिति

नारी का नारी द्वारा शोषण की पहली सीढ़ी है परिवार। परिवार में बहू को हजार रुपए की साड़ी ला दी और ननद को 500 रुपए की तो कोहराम मच जाएगा। इसके विपरीत स्थिति में बहू रूठ जाती है यानी मनभेद की शुरुआत परिवार से ही होती है और इसका श्रीगणेश भी परिवार की नारी द्वारा ही होता है।

दहेज प्रथा

दहेज प्रथा काफी फेमस शब्द हो गया है, लेकिन अभी तक इससे होने वाले हादसों में कमी नहीं आई है। देश में अनुमानतरू हर रोज 20–35 प्रतिशत नारी–आत्महत्या दहेज को लेकर होती है, वहीं दहेज को लेकर सताने या प्रताड़ना में यह संख्या लगभग 50–65 प्रतिशत मानी जाती है। दहेज प्रताड़ना को लेकर भी शुरुआत पुरुष वर्ग से पहले नारी वर्ग कर देता है– अरे, क्या बताऊं, जो दिया ठीक दिया का उदासीभरा स्वर नई बहू की ससुराली नारी रिश्तेदारों से सुनने को मिल जाता है।

रीति–रिवाज

हम इतिहास में स्त्रियों की बात करें तो ये जानकर दुख होगा कि प्राचीनकाल से ही हमारे यहां स्त्रियों की स्थिति बहुत खराब रही है। यहां प्रथा और परंपरा के नाम पर बहुत अत्याचार होता रहा है

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

और आज भी सिलसिला जारी है। बहू अगर मायके से 500 रुपए के उपहार ले आई तो सबसे पहले ससुराल की महिलाएं मीन–मेख निकालेंगी। अपवादस्वरूप लगभग 10 प्रतिशत परिवार ही ऐसे मिलेंगे, जो बहू और उसके मायके का सम्मान रखते हों।

लव मैरिज

वैसे तो लव मैरिज या इंटरकास्ट मैरिज की सफलता मात्र 2 से 3 प्रतिशत होती है, शेष में परिवार बिखर जाता है। ये 2–3 प्रतिशत परिवार समझदार होने की वजह से समन्वय का काम इनमें बाखूबी हो जाता है, वरना लगभग 85 से 90 प्रतिशत परिवारों लव मैरिज के कुछ समय बाद टूट जाते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है अस्वीकार्यता।

लड़की अगर नीची जाति की है तो दिखावे के लिए ससुराल की महिलाएं औपचारिक इज्जत जरूर करेंगी, मगर व्यक्तिगत तौर पर या कहें कि पारिवारिक स्तर पर पुरुषों से ज्यादा टेढ़ी नजर ससुराली महिलाओं की रहती है। अगर लड़की ने किसी गैर जाति या नीची जाति के लड़के से ब्याह कर लिया तो लड़की का मायका इसलिए बंद हो जाता है कि मायके में और भी उसकी बहने हैं। अपवादस्वरूप मात्र 4–5 प्रतिशत परिवारों में ऐसा नहीं मिलेगा।

पुरुष सत्ता

पुरुष सत्तात्मक प्रथा में भी नारी का ही योगदान है। पति भले ही शराबी हो, उसे सुधारने में अगर पड़ोसी उससे मारपीट दे, तो पत्नी मोगरी लेकर खड़ी हो जाएगी यानी पत्नी को अपना अपमान सहन है। श्मेरा पति परमेश्वर हैश वाला भाव आज भी विद्यमान है, भले ही पति पत्नी को रोज मारता–कूटता हो। अगर पत्नी, पति का विरोध करती है तो पति से तो प्रताड़ित होती ही है, परिवार की महिलाएं भी कुछ न कुछ ताने जरूर देती हैं।

गृहस्थी की गाड़ी के गुरुतर दायित्व का निर्वाह करने वाली नारी का गृह स्वामिनी के रूप में उसके श्रम का महत्व किसी भी दृष्टि से कम नहीं आंका जा सकता, परंतु विडंबना यही रही है कि उसके कार्यों का उचित रूप से सम्मान नहीं किया जाता। नारी को सिर्फ घरेलू जीवन, बच्चों के लालन–पोषण, रसोईघर, समूचे परिवार की देखभाल करने के लिए ही सीमित कर दिया जाता है जबकि पुरुष को बाह्य जगत, सार्वजनिक क्षेत्रों, राजनीति, धर्म, ज्ञान–विज्ञान, उत्पादन के सभी साधनों से लैस मान लिया जाता है।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

मगर समय–परिवर्तन के साथ ही नारी हर क्षेत्र में आने लगी है, नौकरी करने लगी है, समाजसेवा में लगी है, सेना में अपनी ताकत दिखा रही है, फिर भी नारी का शोषण जारी है जिसमें एक हद तक नारी वर्ग भी जिम्मेदार है, क्योंकि शॉर्टकट का रास्ता नारी वर्ग ने भी अपना रखा है। यही कटु सत्य है और इसी कारण नारी की दुर्गति में नारी का भी योगदान महत्वपूर्ण है।

सदर्भ

१. जे सी अग्रवाल (2009). भारत में नारी शिक्षा. प्रभात प्रकाशन. आई०ऍस०बी०ऍन० 978–81–85828–77–0.

२. सुमन कृष्ण कांत (1 सितम्बर 2001). इक्कीसवीं सदी की ओर. राजकमल प्रकाशन. आई०ऍस०बी०ऍन० 978–81–267–0244–2.

३. डॉ. जे. पी. सिंह, (2016). आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. आई०ऍस०बी०ऍन० 978–81–203–5232–2.

४. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, तृतीय सं. लोकभारती–2001, पृ.13

नासिरा शर्मा दृ आधा आबादी और इलाहाबाद–हिंदी अनुशीलन, जून–2004, पृ.42